Volume-8, No. 1 Feb.-2021, pp. Hin.09-11

बी0 एड0 प्रशिक्षण में सूक्ष्म शिक्षण की भूमिका

डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा अस्सिटेंट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
ए.पी.एम.पी.जी. कालिज उझानी बदांयू उत्तर प्रदेश भारत।

भूमिका

किसी देश की प्रगति में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता हैं। छात्रों को शिक्षा प्रदान करना शिक्षक का पुनीत कर्तव्य हैं। जिससे देश एवं समाज प्रतिदिन उन्नति के शिखर पर अग्रसर होते रहे। अतः हमारे देश भारत में अध्यापक शिक्षा के अंतर्गत कई प्रकार के शिक्षक–प्रशिक्षण पाठयक्रमों का संचालन विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों द्वारा संचालित किया जा रहा हैं। जिनमें बी0एड0 प्रशिक्षण महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। वर्तमान में कोई अभ्यर्थी स्नातक/परास्नातक परीक्षा उतीर्ण कर तथा बी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त कर माध्यमिक स्कूलों में शिक्षक पद के लिए अर्हता प्राप्त कर लेता हैं और शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित परीक्षा में चयनित होकर शिक्षक बन सकता हैं।

मुख्य शब्द– प्रशिक्षण, सूक्ष्म शिक्षण, सूक्ष्म शिक्षण के सिद्धांत, सूक्ष्म शिक्षण चक्र।

प्रशिक्षण

किसी कार्य के उचित संपादन के लिए आवश्यक विशिष्ट ज्ञान, अभिवृति कौशल एवं व्यवहार के विकास पर प्रशिक्षण बल देता हैं। यह व्यवहार एक कार्य से दूसरे कार्य के लिए अलग–अलग होता है, यदि हम किसी व्यक्ति को अध्यापक के रुप में प्रशिक्षित करते हैं तो हम उन कौशलों का विकास करते हैं जो उस व्यक्ति के लिए एक अच्छा अध्यापक होने के लिए आवश्यक हैं। ''

शिक्षा तकनीकी की धारणा यह हैं कि शिक्षक जन्म नहीं, अपितु बनाए जा सकते हैं। परिणाम स्वरुप बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षक व्यवहार में सुधार हेतु अनेक पृष्ठपोषण की प्रविधियों का प्रयोग विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में किया जा रहा हैं, जिनमें सूक्ष्म शिक्षण महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

सूक्ष्म शिक्षण

सूक्ष्म शिक्षण एक प्रकार की प्रयोगशाला विधि हैं, जिसमें छात्र–अध्यापक शिक्षण कौशल का अभ्यास बिना किसी को हानि पहुचाए करते हैं। सूक्ष्म शिक्षण छोटे स्तर पर शिक्षण अनुभव हैं, इसमें एक छात्राध्यापक 5 से 10 छात्रों को 5 से 10 मिनट का शिक्षण प्रदान करता है, इसमें शिक्षण कार्य को वीडियों टेप में टेप कर दिया जाता है, जिसमें शिक्षण की कमियों को देखा जा सके और भविष्य में उनमें सुधार किया जा सके हैं। छात्र–अध्यापक के कक्षा सहयोगी और शिक्षक प्रशिक्षक भी छात्र अध्यापक को शिक्षण में सुधार हेतु निर्देशन एवं परामर्श प्रदान करते हैं। वास्तव में सूक्ष्म शिक्षण के दौरान पहले छात्र–अध्यापकों को कक्षा में विशिष्ट कौशलों को पढाया जाता हैं। इसमें किसी विषय प्रकरण को पढाया जाता हैं। जिसमें छात्रों को सीखने और समझने में सफलता मिल सके।

सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषाएँ– सूक्ष्म शिक्षण को विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों ने अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया हैं जो निम्न हैं–

1.डी0 डब्ल्यू एलन के अनुसार–

''सूक्ष्म शिक्षण सरल लिखित शिक्षण प्रक्रिया हैं जो छोटे आकार की कक्षा में कम समय में पूर्ण होती है।''

2–बुश के अनुसार– सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षण प्रशिक्षण की वह प्रविधि है जिसमें शिक्षक स्पष्ट रुप से परिभाषित शिक्षण कौशलों का प्रयोग करते हुए, ध्यान पूर्वक पाठ तैयार करता है, नियोजित पाठों के आधार पर, पाँच से दस मिनट तक वास्तविक छात्रों के छोटे समूह के साथ अंतः क्रिया करता है, जिसके परिणाम स्वरुप वीडियो टेप पर प्रेक्षण प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

3– प्रो0 बी0 के0 पासी के अनुसार– "सूक्ष्म शिक्षण एक प्रशिक्षण विधि है जिसमें छात्राध्यापक किसी एक संप्रत्यय को पढाता है।"

4– एल0 के0 जंजीरा एवं अजीत सिंह "सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषा देते हुए कहते है, सूक्ष्म शिक्षण छात्राध्यापक के लिए एक प्रशिक्षण स्थिति है, जिसमें सामान्य कक्षा शिक्षण की जटिलताओं को एक समय में एक ही शिक्षण कौशल का अभ्यास कराके, पाठय

वस्तु को किसी एक सम्प्रत्यय तक सीमित करके, छात्रों की संख्या को 5 से 10 तक सीमित करके तथा पाठ की अवधि 5 से 10 मिनट करके प्रशिक्षण अभ्यास कराया जाता है।"

5– श्रीवास्तव, सिंह तथा राय (1970) के अनुसार– "सूक्ष्म शब्द का एक गुढार्थ भी हो सकता है, क्योंकि सूक्ष्म–शिक्षण में कौशल को छोटी–छोटी अर्थात सूक्ष्म इकाईयों में विभाजित कर प्रत्येक में बारीकी से प्रशिक्षण दिया जाता है। अतः सूक्ष्म शब्द का प्रयोग इस संदर्भ में उचित ही है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते है, कि सूक्ष्म शिक्षण अध्ययन की प्रशिक्षण क्षेत्र में एक न्यूनतम आशा और उत्साह प्रतीक बनकर छात्र अध्यापकों के शिक्षक व्यवहार में सुधार कर रहा है। इसकी अभी विकास शील प्रवृत्ति है, जो भविष्य में प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

सूक्ष्म शिक्षण के सिद्धांत "एलन तथा रियान (1968) नें सूक्ष्म–शिक्षण के निम्नांकित पाँच मूलभूत सिद्धांतों का वर्णन किया है–

1–सूक्ष्म–शिक्षण वास्तविक शिक्षण है।

2–किंतु इस प्रकार के शिक्षण में साधारण कक्षा शिक्षण की जटिलताओं को कम कर दिया जाता है।

3–एक समय में किसी भी एक विशेष कार्य एवं कौशल के प्रशिक्षण पर ही जोर दिया जाता है।

4–अध्यापकीय प्रक्रिया पर अधिक नियंत्रण रखा जाता है।

5–परिणाम संबंधी साधारण ज्ञान एवं प्रतिपुष्टि के प्रभाव की परिधि विकसित होती है।"

सूक्ष्म शिक्षण चक्र

वास्तव में छात्राध्यापक सूक्ष्म शिक्षण चक्र की प्रक्रिया को जब तक करता है, जब तक उसे शिक्षण कौशल विशेष समय निपुणता (Mastery) प्राप्त ना हो जाय। इसमें

1– पाठ योजना एवं शिक्षण

2– पुष्ठ पोषण

3– पुनः पाठ नियोजन

4– पुनः शिक्षण

5– पृष्ठ पोषण होता है। इन पाँच पदों क्रमों को मिलाकर एक चक्र बन जाता है, जिसे सूक्ष्म शिक्षण चक्र कहते है।

सूक्ष्म शिक्षण की

बी0 एड0 शिक्षण प्रशिक्षण में इस नवीन विद्या का जन्म प्रशिक्षण व्यवस्था की कमी को दूर करके उसे बांछित शिक्षण–कौशलों में दक्षता उत्पन्न करने हेतु विकसित किया गया है। इसके प्रमुख गुण इस प्रकार है–

1–सूक्ष्म शिक्षण शिक्षण–शिक्षणार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं एवं दक्षताओं में पूर्णता प्राप्ति हेतु सरलीकृत प्रविधि है, इसमें विभिन्न शिक्षण कौशल, पाठय वस्तु एवं कक्षा अनुशासन इत्यादि प्रत्यय को प्रशिक्षण द्वारा छात्राध्यापक में परिपक्ता लाई जाती है।

2–छात्राध्यापक एक समय में, एक ही विषय, एक ही पाठ योजना का छात्रों वाली कक्षा में निश्चित शिक्षण कौशल पर आधारित शिक्षण पर ध्यान केंद्रित रखता है तथा साथी प्रशिक्षणार्थियों एवं पर्यवेक्षक के सहयोग एवं परामर्श से अपने शिक्षण में न्यूनताओं को दूर कर वांछित परिवर्तन द्वारा शिक्षण में पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

3–छात्राध्यापक द्वारा परंपरागत गुरु शिष्य परंपरा एवं आधुनिक वैज्ञानिक और इलेक्ट्रॉनिक दोनों साधनों का प्रयोग सूक्ष्म शिक्षण में संभव है अतः यह वास्तविक शिक्षण है।

4–छात्राध्यापकों के लिए व्यवसायिक परिपवक्ता तथा आत्मविश्वास पूर्वक शिक्षण करने हेतु सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास पर्याप्त लाभकारी होता है।

5–सूक्ष्म शिक्षण में छात्राध्यापक श्रव्य दृश्य शिक्षण उपकरण का प्रयोग कर अपने विभिन्न शिक्षा कौशलों में अधिक कुशलता प्राप्त कर सकता है तथा प्रतिपुष्टि हेतु वैज्ञानिक एवं इलेक्ट्रॉनिक शिक्षण यंत्रों का प्रयोग करना एवं स्वः मूल्यांकन संभव है।

6–सूक्ष्म शिक्षण में छात्राध्यापक के शिक्षण का समुचित निरीक्षण शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों एवं पर्यवेक्षक द्वारा संभव होता है साथ ही साथ समुचित प्रतिपुष्टि द्वारा छात्राध्यापक अपने शिक्षण अभ्यास का परिमार्जित करने हेतु प्रेरित होता है जिससे उसके शिक्षण अभ्यास का गुणात्मक विकास होता है।

7–छात्र– अध्यापक द्वारा सूचित शिक्षण में कक्षा कक्ष की परिस्थितियों पर प्रभाव कारी नियंत्रण संभव है इससे उद्देश्य आधारित शिक्षण संभव है

8–सूक्ष्म शिक्षा शिक्षण में छात्राध्यापकों का कक्षा कक्ष व्यवहार परिभाषित होता है जिसमें सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के द्वारा शिक्षण कौशलों में दक्ष होकर प्रशिक्षु संपूर्ण अध्यापन कला में निपुणता (कुशलता) प्राप्त कर लेता है।

9– सूक्ष्म शिक्षण में छात्र अध्यापक को तुरंत प्रतिपुष्टि प्राप्त हो जाती है। इससे गलती भूल इत्यादि कठिनाइयां स्वतः ही खत्म हो जाती है। टेप रिकॉर्डर तथा वीडियो रिकॉर्डिंग द्वारा अनेक बार छात्राध्यापक द्वारा अपनी कमी को देखकर सुधार किया जाना संभव है।

10–सूक्ष्म शिक्षण में छात्र–अध्यापक के लिए पर्यवेक्षक द्वारा अभिप्रेरणा और पुनर्बलन का प्रयोग किया जाता है। जिससे वह विशिष्टि एवं दक्षता पूर्व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

11–सूक्ष्म शिक्षण कौशल के विकास में होने वाले अपव्यय तथा जटिलताओं को दूर करता है। अर्थात छात्राध्यापक अपनी न्यूनताओं को दूर करने हेतु किसी एक विशिष्ट शिक्षण कौशल पर बार–बार अभ्यास करने की सुविधा प्राप्त करता है।

सूक्ष्म शिक्षण की सीमाएँ

बी0एड0 प्रशिक्षण में सूक्ष्म शिक्षण का महत्वपूर्ण स्थान है यह छात्र अध्यापक की प्रशिक्षण सम्बन्धी कठिनाईयों को दूर कर उसे योग्य एवं निपुण शिक्षण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है लेकिन इसकी भी कतिपय सीमाएं है जो निम्नलिखित है

1–सूक्ष्म शिक्षण भारतीय परिवेश के अनुकूल अवसर प्रदान नहीं कर पाता, क्योंकि सूक्ष्म शिक्षण को सुसज्जित प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है।

2–सूक्ष्म शिक्षण द्वारा एक समय में केवल एक ही, प्रशिक्षु प्रशिक्षण प्राप्त करता है, वह शिक्षण अभ्यास करता है, अतः समय को दृष्टि से सूक्ष्म शिक्षण अधिक व्ययशाली है।

3–सूक्ष्म शिक्षण में समय और छात्र संख्या बहुत कम होती है जो संकुचित वातावरण प्रदान करती है।

4–सूक्ष्म शिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों की कक्षा वास्तविक कक्षा के शिक्षण की परिस्थितियां प्रदान नहीं कर सकती है।

5–वर्ग में शिक्षण अभ्यास प्रक्रिया की तुलना में प्रतियोगिता का वातावरण बन जाता है। जिससे मूल्यांकन निदान एवं उपचारात्मक कार्य पर कोई ध्यान नहीं देता है।

6–सहपाठी शिक्षकों द्वारा भूमिका निर्वाह करने से कार्य की मूल आत्मा एवं मूल उद्देश स्वतः ही खत्म हो जाता है। वर्ग में मनोरंजन का वातावरण बन जाने की पूर्ण संभावना बन जाती है।

7–सूक्ष्म शिक्षण में कौशलों एवं विषय वस्तु पर बहुत अधिक महत्व दिया जाता है।

8–भारत में सूक्ष्म शिक्षण के द्वारा पढ़ाने वाले प्रशिक्षित शिक्षकों का पर्याप्त संख्या में अभाव पाया जाता है, जिससे शिक्षण कौशल दक्षता प्राप्ति हेतु उचित मार्गदर्शन, निर्देशन एवं प्रभाव प्रभाव उत्पादकता छात्राध्यापक को प्राप्त नहीं हो पाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 शर्मा, आर0 ए0: अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी, प्रकाशन विनय रखेजा C/o आर लाल बुक डिपो, निकट गवर्नमेंट इंटर कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ पिन प्लस– 250001–3700, संस्करण, 2011 पेज–29–30।
2. डॉ0 कुलश्रेष्ठ एस0 पी0, डॉ0 कुलश्रेष्ठ ए0 के0 : शिक्षा तकनीकी के मूल आधार, प्रकाशन– विनय रखेजा C/o आर लाल बुक डिपो, निकट गवर्नमेंट इंटर कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ पिन प्लस– 250001–37001, पेज– 257–58।
3. डॉ0 कुलश्रेष्ठ एस0 पी0, डॉ0 कुलश्रेष्ठ ए0 के0: शिक्षा तकनीकी के मूल आधार, प्रकाशन– विनय रखेजा C/o आर लाल बुक डिपो, निकट गवर्नमेंट इंटर कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ पिन प्लस –250001–37001, पेज– 259।
4. डॉ शर्मा सुरेशः शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबंध, प्रकाशन– साहित्यागार, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर फो0 0141–2310785, संस्करण, 2012 पेज– 162।
5. यादव डी0 एस0: सूक्ष्म शिक्षण, प्रकाशन–प्रेरणा प्रकाशन, सी–13 रोज, अपार्टमेन्ट, सेक्टर–14 एक्सटेंशन, रोहिणी, दिल्ली– 110085, संस्करण, 2014 पेज– 9।